This work is a digital copy of a play which was scripted and performed by Jana Natya Manch, Delhi. It is being made available on the internet via digital means to enable performance, translation, adaptation, or academic study.

Jana Natya Manch is placing this work in the public domain under the Creative Commons Attribution Non-Commercial Share Alike License 3.0.

Usage guidelines

The rights to the work rest with Jana Natya Manch. You may use it under the following conditions:

+ You will make non-commercial use of the work.
+ Maintain attribution of the work to Jana Natya Manch.
+ Sharing the work with others will be contingent upon all of the above conditions being agreed to by every subsequent user.

For further information visit www.jananatyamanch.org

Note: This PDF was prepared by exporting an earlier version of the file which used proprietary fonts. Due to some incompatibility some of the fonts have not converted properly. We believe you will be able to read the play nevertheless.

जिन्हें यक़ीन नहीं था

;जन नाट्य मंचऋ दिसंबर १९९८ऋ ३० मिनटऋ ७ कलाकारद्ध

पात्र विभाजन

१. बटेसर / राजा
२. देवकी / ग़ुलाम की बीवी
३. चंदन / ग़ुलाम
४. कर्मा / मुनादीवाला / तांत्रिक
५. बलजिंदर / फ़ळव़ळीर / सिपाही
६. शब्बो
७. शिवचरण

[इस नाटक की कहानी एक फ़ैळक्ट्री वेळ अंदर घटित होती है। एक रात की कहानी है। पहले अभिनय स्थल ख़ाली है। देवकी उल्टी करती हुई बीच में आती है। बिसूरता हुआ बटेसर, पीछे देखता हुआ अंदर आता है।]

बटेसर : तू कौन होता है मुझे रोकनेवाला? ये फैळक्ट्री है कोई जेल नहीं है। मैं बाहर जा रहा हूं, हां नहीं तो। *;देवकी को देखता हैद्ध* ओए देवकी! ये क्या कर रही है तू? क्या हो गया है तुझे?

देवकी : *;खीजकरद्ध* गाना गा रही हूं!

बटेसर : *;मासूमियत सेद्ध* उल्टी कर रही है। क्या हो गया देवकी?

देवकी : *;चिढ़ाती हैद्ध* मेरे दो सींग निकल आए हैं।

बटेसर : *;हैरान होकरद्ध* तेरा पेट खराब है। देख तेरी उल्टी में से वुळछ भी नहीं निकला। खाली-खाली पड़ी है।

देवकी : निकले थे दो बड़े-बड़े चूहे। भाग गए।

बटेसर : भाग गए। तू अभी रुक देवकी, मैं अभी शब्बो बुआ को बुलाता हूं। वो चूहे पकड़ लेती है। शब्बो बुआ ओ शब्बो बुआ...

[कर्मा आता है।]

कर्मा : ओ बटेसर शोर क्यों मचा रहा है?

बटेसर : क्या कर्मा ताऊ मैं शोर थोड़े ही मचा रहा हूं। वो तो शब्बो बुआ नहीं वो चंदन है न वो मुझे हमेशा तंग करता रहता है।

[कंघी से बालों को संवारता हुआ, चंदन का प्रवेश। साथ में बलजिंदर।]

चंदन : *;रौब सेद्ध* बलजिंदर तुझे कह दिया बटेसर फ़ैळक्ट्री से बाहर नहीं जाएगा, तो नहीं जाएगा।

बलजिंदर : जब वो कह रहा है वो ग़लती से फ़ैळक्ट्री में रुक गया था तो तू उसे बाहर क्यों नहीं जाने दे रहा?

चंदन : बाहर यूनियन वाले हैं। अगर यूनियन वालों को पता लग गया अंदर काम चल रहा है तो एक वेळ चक्कर में सबकी पिटाई हो जाएगी। समझा।

बटेसर : *;बिसूरकरद्ध* देखा कर्मा ताऊ ऐसे ही तंग करता रहता है।

चंदन : क्या तंग करता है? हाथ मार दिया तो फ़ैळक्ट्री से बाहर जावेळ गिरेगा। *[बटेसर घबराकर दुबक जाता है। चंदन कंघी करता है। शब्बो आती है।]*

शब्बो : *;डपटकरद्ध* ए चंदन, किसको हाथ मारेगा रे? चलो-चलो अपने काम पे लगो। *[कोई हिलता नहीं। ख़ामोशी। शब्बो काम में लगती है।]* सुना नहीं तुम लोगों ने चलो काम पे लगो। चलो देवकी रानी, चलो काम पे। *;देवकी बुड़बुड़ाती है। फिर चंदन सेद्ध* ओ हीरो तुझे क्या अलग से बोलना पड़ेगा। जब देखो बाल संवारता रहता है। *[एक-एक करवेळ सबको काम पे लगाती है। कर्मा नोंक-झोंक करता है। बटेसर बिसूरता है। बलजिंदर शिकायत करता है। सभी काम करने लगते हैं। शिवचरण भागकर आता है।]*

शिवचरण : शब्बो, कर्मा। नाले की तरफ़ळ से बहुत सारे हड़ताली आ रहे हैं। गेट पर बहुत सारी पुलिस खड़ी है।

[सब चौंककर रुक जाते हैं।]

बटेसर : हड़ताली आ रहे हैं? तो मैं बाहर जा रहा हूं।

शब्बो : *;डपटकरद्ध* ए बटेसर, चल बैठ जा कोई बाहर नहीं जाएगा। हमें डबल वेज इसलिए मिल रहा है क्योंकि बाहर हड़ताल है और हम यहां अंदर काम कर रहे हैं।

बटेसर : *;भोलेपन सेद्ध* अच्छा? मैंने सोचा मालिक ऐसे ही हमें डबल वेज दे रहा है।

शब्बो : हां तेरा मामा लगता है न मालिक, जो हमें डबल वेज ऐसे ही दे रहा है।

सातों मज़दूर काम में लगते हैं।

बटेसर : पर शब्बो बुआ, ये हड़ताल क्यों हो रही है?

कर्मा : अरे वही घिसी पिटी चार-छः मांगें–मिनीमम वेज, महंगाई भत्ता, अगैरा-वगैरा।

बटेसर : कितने दिन चलेगी ये हड़ताल?

बलजिंदर : पूरे तीन दिन चलेगी।

देवकी : तीन दिन ही क्यों, मैं तो कहूं पूरे सात दिन चले हड़ताल।

सब : सात दिन? क्यों? क्यों भई? एक हफ़्ता???

देवकी : देखो भई, डबल वेज जो मिलेगा सो मिलेगा ऊपर से खाना मुफ़्त!

सब हँसते हैं।

कर्मा : वैसे चंदन तू क्या करेगा डबल वेज का?

चंदन : ताऊ, कविता को पिक्चर दिखाऊंगा। और क्या?

कर्मा : कौन कविता भई?

बलजिंदर : वो ही! अपने सीटू वाले कामरेड श्यामलाल की बेटी।

शिवचरण : चंदन ये तो तू भूल ही जा कि श्यामलाल अपनी बेटी की शादी तुझ से करेगा।

चंदन : क्यूं, क्यूं? क्यूं नहीं करेगा?

शिवचरण : भई देख श्यामलाल तो सीटू वेळ लिए जान छिड़कता है। और तू जो है हड़ताल वेळ दौरान फ़ैळक्ट्री में काम कर रहा है।

चंदन : तो उस श्यामलाल को कौन बताएगा कि मैं काम कर रहा हूं अंदर?

बटेसर : मैं बताऊंगा, मैं।

चंदन : तू बता! फिर तुझे मैं बताऊंगा, मैं।

चंदन बटेसर को मारने जाता है। शब्बो डांटकर दोनों को रोकती है।

बलजिंदर : वैसे, जब भी कोई समस्या लेकर कामरेड श्यामलाल वेळ पास जाता है, तो सबसे पहले वो उसी से पूछते हैं कि इसमें तुम्हारी क्या राय है। तो हो सकता है कि इस मामले में भी वो कविता की राय पूछ लें। तो बन गया चंदन का काम।

कर्मा : हो ही नहीं सकता। लिखवा लो मुझसे।

देवकी : लेकिन कर्मा ताऊ अगर कविता ने ये धमकी दे दी कि अगर उसकी शादी चंदन से नहीं हुई तो वो अपनी जान दे देगी। तब क्या करेंगे इसवेळ कामरेड श्यामलाल?

बलजिंदर : ऐसी वैसी धमकियों से नहीं डरते कामरेड श्यामलाल।

बटेसर : हां पिछली हड़ताल में मालिक वेळ गुंडों ने बहुत मारा था कामरेड श्यामलाल को, लेकिन फिर भी लाल झंडा लेकर सबसे आगे थे जुलूस में।

शिवचरण : हो सकता है कामरेड श्यामलाल राज़ी हो जाएं, लेकिन वो इस शादी से खुश नहीं होगा।

चंदन : उसकी खुशी-वुशी की किसको परवाह है? अगर परवाह होती, तो आज बाहर होते हड़ताल पे, अंदर काम नहीं कर रहे होते।

बलजिंदर : चाचा, मैं सोच रहा था कि मैंने हड़ताल वेळ दौरान फ़ैळक्ट्री में आकर कोई गलती तो नहीं कर दी।

शिवचरण : क्यूं भई।

बलजिंदर : पिछली बार भी बाल-बाल बचा था उन सीटू वालों वेळ हाथों से।

कर्मा : अबे बीमारी, तू भी अजीब है। जब अंदर होता है तो बाहर की चिंता लगी रहती है। जब बाहर होता है तो कहता है बहुत दिनों से डबल वेज नहीं मिला। मेरी दवाइयों वेळ बिल पेंडिंग हैं।

बलजिंदर : *;खीजकरद्ध* क्या करूंगा डबल वेज लेकर। उन सीटू वालों वेळ हत्थे चढ़ गया तो मार मार वेळ बताशा बना देंगे। दस बीमारियां पहले से हैं पंद्रह और लग जाएंगी।

चंदन : पता नहीं मालिक क्यूं लेकर आया है इस बीमारी को फ़ैळक्ट्री में। इस बीच, इस बीमारी को वुळछ हो गया तो कहां लेकर जाएंगे इसे बाहर?

बलजिंदर : *;तुनककरद्ध* मालिक इस बीमारी को इस फ़ैळक्ट्री में इसलिए लेकर आया है क्योंकि सबसे अच्छे पीस बनाता है ये बीमारी।

चंदन : बनाता होगा अच्छे पीस! फ़ळालतू मत बोल। कान पे मार दिया तो बहरा हो जाएगा।

चंदन/बलजिंदर झड़पने लगते हैं। शब्बो डांटकर उन्हें काम पे जाने को कहती है।

देवकी : वैसे शिवचरण चाचा तुम क्या करोगे डबल वेज का? न तुम्हारे बीवी न बच्चे, न कोई आगे न पीछे। तुम क्या करोगे इतने पैसों का?

चंदन : हो सकता है चाचा ने भी कोई चाची ढूंढ़ रखी हो।

सब हँसते हैं। शिवचरण खिसियाता है।

बलजिंदर : बड़े-बूढ़ों से बात करने की तमीज़ नहीं है। इसीलिए तेरी शादी नहीं कराएंगे!

चंदन : फिर बोला, फिर बोला, मारूंगा कान पर।

चंदन और बलजिंदर की झड़प होने लगती है। कर्मा बाहर देखता हुआ खड़ा हो गया है। शब्बो काम रोककर बाहर देखती है। डांटती है।

शब्बो : चुप करो तुम दोनों। बाहर से शोर की आवाज़ आ रही है। सुनो!

बटेसर फ़ळौरन खिड़की तक भागता है। देखकर चिल्लाता है।

बटेसर : अबे सिक्यूरिटी गार्ड वेळ बच्चे! झंडा को क्यूं हाथ लगा रहा है!

चंदन, बटेसर को खींचकर पीछे करता है। और खुद खिड़की से देखता है। सब खड़े होते हैं।

चंदन : ए शब्बो बुआ, सिक्यूरिटी वाले झंडा उतारने की कोशिश कर रहे हैं। उधर से हड़तालियों की भीड़ आगे बढ़ रही है। पुलिस वाले उन्हें रोकने की कोशिश कर रहे हैं। पुलिस वालों ने हड़तालियों पर डंडे बरसाना शुरू कर दिए। हड़ताली भाग रहे हैं। ले बुआ सिक्यूरिटी वालों ने झंडा उतार दिया। हा! हड़ताली भाग गए! झंडा उतर गया, हड़ताल पेळल!

सब अपने-अपने काम पर जाने लगते हैं। बटेसर हक्का-बक्का है।

शब्बो : बड़ी-बड़ी हांकते थे।

कर्मा : अपना झंडा तक तो बचा नहीं पाए।

देवकी : अपनी मांगें क्या ख़ाक मनवाएंगे।

बलजिंदर : एक बार उतरा हुआ झंडा लगा है कभी?

चंदन : बड़ी-बड़ी हांकते थे-'हमारा झंडा, हमारा झंडा'। उतर गया सालों का झंडा। *;अचानक चिल्लाकरद्ध* ए बुआ ये हड़ताली तो फिर वापिस आ गए। पत्थर मार रहे हैं बुआ।

बटेसर : हां-हां कामरेड हम यहां पर काम कर रहे हैं।

चंदन उसका मुंह बंद करवेळ नीचे गिरा देता है। सब पत्थर से बचते हैं।

शब्बो : खुद तो काम करते नहीं, हमें भी नहीं करने देंगे।

कर्मा : जलते हैं हमसेहमें डबल वेज जो मिल रहा है।

चंदन : लो सालों ने लाइट भी काट दी।

बलजिंदर : ये बिजली वाले जब देखो तब लाइट काट देते हैं।

चंदन : *;गुस्से मेंद्ध* बिजली वालों ने नहीं काटी। ये सब इसकी *;बटेसर की तरप़ळ इशारा करता हैद्ध* वजह से हुआ है। हल्ला मचा रहा था। इसीलिए यूनियन वालों को पता चल गया कि अंदर काम चल रहा है और उन्होंने लाइट काट दी।

शिवचरण : अब लाइट नहीं होगी तो काम वैळसे होगा?

शब्बो : काम नहीं होगा तो प्रोडक्शन ठप्प।

कर्मा : अब ये लाल झंडे वाले तीन दिन तक लाइनमैन को ठीक करने भी नहीं आने देंगे।

बटेसर : न आएगी लाइट, न होगा प्रोडक्शन और न मिलेगा तुम्हें डबल वेज।

चंदन : वैळसे नहीं मिलेगा डबल वेज। मालिक ने हमें तीन दिन वेळ लिए बुलाया है। अब लाइट हो या न हो इससे हमें क्या लेना।

बलजिंदर : मैं इन मालिकों को अच्छी तरह जानता हूं। ये न देंगे डबल वेज।

चंदन : ओ बीमारी तू चुप रह!

देवकी : बलजिंदर ऐसे वैळसे होगा?वैळसे नहीं देंगे डबल वेज? वैसे भी मुझे तो ज्यादा जरूरत है डबल वेज की।

शब्बो : *;तंज़ मेंद्ध* लो इन्हें ज़्यादा ज़रूरत है! जैसे हमें ज़रूरत ही न है। मेरे तो चार-चार बच्चे हैं। तू कोई रानी है क्या?

देवकी : नहीं बुआ वो बात नहीं है।

शब्बो : तो क्या बात है?

देवकी : ओफ्प़ळो! समझा करो न शब्बो बुआ।

शब्बो : क्या समझा करे शब्बो बुआ। *देवकी शब्बो वेळ कान में वुळछ कहती है।* लो जी कर लो बात। बच्चा कर रही है। एक कर रही है तो ठीक है। और मत करियो। नहीं तो मेरी तरह हो जाएंगे चार-चार।

सब हँसते हैं। शब्बो और देवकी खुसरपुळसर करते हैं।

शिवचरण : देवकी अब तो मिठाई खिलानी पड़ेगी।

देवकी : हलवा बनाऊंगी तुम्हारे लिए।

चंदन : *;बटेसर को लात मारता हैद्ध* अबे ओ बटेसर, अबे ओए गधे।

बटेसर : अबे ओ चंदन तू मुझे मारता क्यों रहता है?

चंदन : गधे को मारूंगा नहीं तो क्या प्यार करूंगा?

बटेसर : मैं गधा दिखता हूं! बता-बता मुझे, मैं कहां से गधा लग रहा हूं।

चंदन : देवकी को बच्चा होने वाला है। तो तू उसवेळ बच्चे का मामा नहीं लगेगा गधे। गधा मामा।

बटेसर खुश होकर देवकी को बीच में लाता है।

बटेसर : ओ देवकी! अब मैं समझ गया तू उल्टी क्यों कर रही थी। तेरी उल्टी में से न बच्चे निकलेंगे।

सब हँसते हैं।

कर्मा : अबे बच्चे-वच्चे तो बाद में निकलते रहेंगे। पहले ये बताओ कि रात वैळसे काटें?

चंदन : *;कंघी करता है।द्ध* सो जाओ चाचा। रात को क्या डांस करोगे?

बलजिंदर : नहीं-नहीं मैं नहीं सोऊंगा। प़ळर्श ठंडा है मुझे ज़ुकाम हो गया तो।

चंदन : ओ बीमारी तू चुप रह।

शिवचरण : लाइट होती तो मैं उपन्यास ख़त्म कर लेता।

देवकी : कौन सा उपन्यास?

शिवचरण : प्रेमचंद का गोदान पढ़ रहा हूं। क्या उपन्यास है।

कर्मा : तू भी अजीब है शिवचरण। लाइट होती तो अपना प्रोडक्शन नहीं कर लेते!

सब हँसते हैं।

बटेसर : कर्मा ताऊ। हम न गाना गाते हैं।

चंदन : हां गाना गाते हैं।

बटेसर : लाल झंडा लेकर कामरेड आगे बढ़ते जाएंगे।

[चंदन रोकता है।]

चंदन : पीछे आ जा। तेरा लाल झंडा उतर गया और तेरे कामरेड पीछे भाग गए। कान पे मारूंगा...शब्बो बुआ गाना गाना है तो वो वाला गाते हैं....

'मैं निकला गड्डी लेवेळ रस्ते पे, सड़क पे....'

शब्बो : *;चंदन को गिरेबान से पकड़करध्द* आ तुझे सड़क पर बिठा दूं! तुम्हारा शोर सुनकर पत्थर चले थे। तेरा गाना सुनकर गोलियां चलेंगी गोलियां।

चंदन : क्या बुआ? न तू लड़ने देती है, न गाना-गाने देती है, न डांस करने देती है। यहां पैळक्ट्री में क्या करेंगे।

[शब्बो चंदन को चुप कराती है। इस बीच देवकी और शिवचरण वुळछ बात करते हैं।]

देवकी : बुआ! हम न एक कहानी बनाते हैं!

शब्बो : *;चिढ़करध्द* कहानी?

बटेसर : *;भोलेपन सेध्द* कहानी?

देवकी : हां, कहानी, कहानी, कहानी।

चंदन : यहां पैळक्ट्री में कहानियां ही तो बन रही हैं?

शिवचरण : क्यों नहीं बन सकती कहानी? कहानी मैं सुनाता हूं- एक था जुम्मन शेख़ और एक था अलगू चौधरी। दोनों में बहुत पुरानी और पक्की दोस्ती थी।

चंदन : ओ चाचा क्या घटिया कहानी सुना वेळ बोर कर रहे हो मज़दूरों को। कहानी तो मैं सुनाऊंगा। बात है बहुत पुरानी, सुन लो मेरी ज़ुबानी *;तुकबंदी से ख़ुश होता है। सब वाह-वाह करते हैं।ध्द* दूर देश में था इक राजा- *;रुकता है।ध्द*

बलजिंदर : और... एक थी उसकी रानी।

[सब सुनने वेळ लिए बैठते हैं।]

बटेसर : लेकिन राजा वैळसा था?

देवकी : था बड़ा ही अत्याचारी, खिंचवा देता था खाल। महलों में थे भरे ख़जाने, जनता थी कंगाल।

[सब पात्र कहानी वेळ दृश्य में आते हैं। 'महाराज की जय' का नारा लगता है।]

राजा : तो तुम लोगों का कहना है कि बाढ़ की वजह से तुम्हारी खेती बर्बाद हो गई। हम लेकर आए तुम्हारे गांव में बाढ़? हमने बर्बाद की तुम्हारी खेती? कान खोलकर सुन लो। अगर पंद्रह दिन वेळ अंदर-अंदर तुम्हारे गांव का लगान चुकता नहीं हुआ तो तुम्हारे गांव वेळ एक एक जवान आदमी को अपने खेतों में ग़ुलाम बना लूंगा।

['महाराज की जय हो' का नारा लगाते हैं। देवकी कहानी आगे बढ़ाती है।]

देवकी : राजा का था इक ख़ास ग़ुलाम, बड़ा ही मेहनती- कभी न थकने वाला।

[सब पेड़ बनते हैं। ग़ुलाम गुनगुनाते हुए बाग़ में काम करता है।] उस ग़ुलाम को खेती-बाड़ी का शौक था। वो नए नए पौधों की व़ळलमें तैयार करता, तरह तरह की खाद बनाता, ऐसे उपकरण इजाद करता जिनसे पता चलता कि ज़मीन वेळ नीचे कितना पानी है और बारिश कब होगी। उसवेळ बनाए गए फल और पूळल दूर-दूर तक मशहूर थे। लेकिन, मेहनत तो करता था ग़ुलाम और शोहरत पाता था राजा। *;सोचती है। और घबराकरध्द* फिर क्या हुआ??

बलजिंदर : *;मदद को खड़ा होता हैध्द* फिर क्या हुआ? फिर... फिर.... हां! ग़ुलाम की थी एक बीवी।

[देवकी अपने गमछे से सर ढकती है।] और वो पेट से थी। एक दिन ग़ुलाम की बीवी का खट्टा खाने का मन हुआ। उसने ग़ुलाम से कहा.....

बीवी : ए जी! सुनते हो? मेरा खट्टा खाने को जी कर रहा है।

ग़ुलाम : अब खट्टा कहां से लाऊं मैं तुम्हारे लिए?

बीवी : इतना बड़ा आम का बाग़ है। एक कच्चा आम तोड़कर ला दो न।

ग़ुलाम : हां, मैं अभी तुम्हारे लिए कच्चा आम तोड़कर लाता हूं। *;पेड़ को देखते हुएध्द* ये आम थोड़ा बड़ा है। वो वाला थोड़ा छोटा है। वो बहुत पका हुआ है। ये बहुत कच्चा है। हां वो आम ठीक रहेगा। न बड़ा न छोटा, न पका हुआ न कच्चा। हां ये आम ठीक रहेगा। *[जैसे ही ग़ुलाम आम तोड़ने लगता है। पेड़ बने पात्र में से एक सिपाही बनकर उसे पकड़ता है। बाव़ळी पात्र दायरे वेळ किनारे पर बैठकर कहानी सुनते हैं।]*

सिपाही : अबे साले चोरी करता है। चल महाराज वेळ पास।

[ग़ुलाम को राजा वेळ पास लेकर जाता है। ख़ुद बैठता है।]

राजा : तेरी जुर्रत वैळसे हुई हमारे बाग़ से आम चुराने की। याद रख, तू वुळत्ता है वुळत्ता। वुळत्ते की तरह रहना सीख। याद रख अगर आज तेरे तन पे कपड़ा है तो हमारी वजह से। अगर आज तेरे घर में दीया जलता है तो हमारी वजह से। अगर तेरे घर में त्योहार मनता है तो हमारी वजह से। अगर आज तू भूखा नहीं मरता तो हमारी वजह से। सिपाहियो! इस हरामज़ादे को इतना मारो, इतना मारो कि इसवेळ शरीर से बहता लहू इस

सपे़ळद संगमरमर वेळ प़ळर्श को लाल कर दे। खड़े-खड़े मेरी शक्ल क्या देख रहे हो, मारो।

गुलाम चाबुक से मार खाने का माईम करता है। झांझ बजता है। .गुलाम घायल होकर गिर जाता है। फिर कराहता हुआ उठता है।

.ग़ुलाम : *;डर-डरकरद्ध* लेकिन महाराज मैंने तो वेळवल एक फल लिया था।

राजा : तो तू क्या समझता है तेरे एक फल चुराने से हम ग़रीब हो जाएंगे? ये तो उसूल की बात है। सि(ांत की बात है। चोरी तो चोरी होती है चाहे एक फल की हो या पूरे बाग़ की। अगर हम अपने पूरे बाग़ को आग लगवा दें तब भी हम ग़रीब नहीं होंगे। सिपाहियो! जाओ उस बाग़ को राख वेळ ढेर में बदल दो। जिस बाग़ से इस वुळत्ते ने फल चुराया।

राजा बैठ जाता है। फिर बटेसर बनता है।

.ग़ुलाम : नहीं महाराज *;चीख़कर गिर जाता है।द्ध* उस बाग़ को आग मत लगवाइए। मैं पिछले पांच साल से नए आम की खोज कर रहा हूं। मुझे उम्मीद है इस साल मुझे प़ळसल मिल जाएगी। उस बाग़ को आग मत लगवाइए महाराज।

राजा : तुम लोग यूं खड़े-खड़े हमारी शक्ल क्या देख रहे हो? जाओ!

.ग़ुलाम : नहीं महाराज।

अगले संवाद वेळ दौरान चंदन की तरह बैठ जाता है।

शिवचरण : .ग़ुलाम ने एक फल लिया और राजा ने मार-मारकर उसका कचूमर निकाल दिया। ये क्या ठीक किया?

शब्बो : सज़ा तो थोड़ी ज़्यादा थी। पर बात बिल्वुळल सही कही राजा ने।

चंदन : हां राजा ने बात तो बिल्वुळल सही कही। भई चोरी तो चोरी होती है। चाहे एक रुपये की हो या एक लाख की। क्यों शब्बो बुआ?

शब्बो : मैं तो कहूं सारी ग़लती .ग़ुलाम की बीवी की थी।

देवकी : ये क्या बात हुई?

शब्बो : उसने खट्टा मांगा ही क्यों? भई जितनी चादर है उतने ही तो पैर पैळलाने चाहिए।

देवकी : ये क्या बात हुई बुआ? .ग़ुलाम की बीवी पेट से थी। उसका खट्टा खाने को जी किया तो उसने कच्चा आम मांग लिया। वैसे तो तुम्हें भी ख़ूब मालूम होगा, तुम्हारे तो चार-चार बच्चे हैं।

चंदन : *;हँसता हैद्ध* हां बुआ, तू भी उतने पैर पैळलाती जितनी तेरी चादर है। क्यों किए थे इतने बच्चे पैदा?

शब्बो : मेरा शौव़ळ था। हूं!

कर्मा : भई शब्बो तेरा तो शौक ठीक था। लेकिन राजा को क्या शौक चर्राया कि ग़ुलाम को सज़ा देने वेळ चक्कर में अपने ही बाग़ को जला डाला?

बलजिंदर : ये बात ठीक है कर्मा ताऊ कि राजा ने अपना नुव़ळसान किया। लेकिन .ग़ुलाम वेळ नज़रिए से देखो तो .ग़ुलाम कई सालों से बाग़ में काम कर रहा था। उसने नई नई व़ळल्में बनाईं थी, नई नई खाद बनाई थी। नए नए फल बनाए थे, और तो और वो पांच साल से आम की नई व़िळस्म पर काम कर रहा था। इस सब का किसी को प़ळायदा नहीं हुआ।

चंदन : अबे, वो राजा था कोई ख़ैराती नहीं था, जो दूसरों का प़ळायदा देखता, उसे अपना प़ळायदा देखना था। राजा का प़ळायदा इसी बात से था कि .ग़ुलाम हमेशा हमेशा उसका .ग़ुलाम बना रहे। .ग़ुलाम तो रोज़ ही पिटता था, इसमें कौन-सी नई बात थी। असली सज़ा तो राजा ने उसे तब दी जब बाग़ में आग लगा दी।

बटेसर : वो वैळसे?

चंदन : .ग़ुलाम को खेती-बाड़ी का बहुत शौव़ळ था। वो खेतों में काम करता और समझता कि जो वुळछ वो पैदा कर रहा है उस पर उसी का ठप्पा लग गया है। जैसे ये बलजिंदर है-ये भी साला है पै़ळक्ट्री में दो टवेळ का वर्वळर, लेकिन समझता है पै़ळक्ट्री में बनी चीज़ों पर इसी की मोहर है। राजा ने अपने बाग़ में आग लगा वेळ .ग़ुलाम को ये सबक सिखाया कि नई नसल और नई पौध पर राजा की मिल्कियत है ना कि .ग़ुलाम की।

शिवचरण : चंदन, मुझे लगता है इस कहानी में वुळछ गड़बड़ है।

सब : गड़बड़ है? वैळसे?

चंदन : चाचा कहानी तो ठीक चल रही है। उसमें कोई गड़बड़ नहीं है।

शिवचरण : भई कहानी वेळ हिसाब से देखो तो .ग़ुलाम ने एक फल चुराया और राजा ने उसे सज़ा दे दी। लेकिन अगर .ग़ुलाम वेळ नज़रिए से देखो तो वो इतनी मेहनत करता था उस बाग़ में, तो एक फल पर उसका हव़ळ बनता था। इसीलिए मैं कहता हूं इस कहानी में वुळछ गड़बड़ है।

इस दौरान बटेसर उठकर खिड़की की तरप़ळ जाता है।

सब : क्या हुआ बटेसर? पगले को क्या हुआ? बटेसर बैठ जा...

बटेसर : *;खिड़की से झांकते हुए।द्ध* झंडा लग गया।

चंदन उसको खींचता है और ख़ुद देखने लगता है। बलजिंदर उसवेळ पीछे खड़ा है।

चंदन : नहीं-नहीं ये नहीं हो सकता।

देवकी दूसरी खिड़की से देखती है शिवचरण उसवेळ पीछे खड़ा है।

बलजिंदर : हां हां! मैं भी यही सोचता हूं!

देवकी : सिक्यूरिटी वाले तो वहीं खड़े हैं।

शिवचरण : ये तो पेड़ की टहनियां हैं, जो अंधेरे में झंडे जैसी लग रही हैं।

चंदन : साले! झंडा लग गया। मारूंगा कान पे।

कर्मा : *;ताने देता हुआ* सावन वेळ अंधे को हरा ही हरा नज़र आता है। पेड़ की हरी-भरी टहनियां भी इसे लाल झंडा नज़र आ रही हैं।

शब्बो : अव़ळल का पैदल तो था ही, मुआ अब आंखों का भी अंधा हो गया।

चंदन : साले! झंडा लग गया?

बटेसर : हां-हां। देख लेना तुम लोग सुबह होने से पहले-पहले कामरेड श्यामलाल झंडा लगा देंगे। *;बैठता है।* लेकिन अभी तो ये बताओ कहानी में क्या हुआ?

सब : हां देवकी कहानी में आगे क्या हुआ?

देवकी : *;वुळछ सोचकर।* मं मं मं.....ठीक नौ महीने बाद ग़ुलाम वेळ यहां एक छोटा-सा, प्यारा-सा, बच्चा पैदा हुआ। *;अपने गमछे से बच्चा बनाती है।*

चंदन : हां एक चांद का टुकड़ा, मेरे जैसा एक लड़का पैदा हुआ।

देवकी : लड़का नहीं एक लड़की पैदा हुई।

बलजिंदर : लेकिन राजा वेळ यहां कोई बच्चा पैदा नहीं हुआ। राजा ने कितने जतन किए मथुरा गया, काशी गया और तो और महावुळंभ भी नहा आया। फिर भी बच्चा न हुआ।

देवकी : फिर उस रियासत में एक पळकीर आए। उन्हें देखकर कोई संत या पीर नहीं कह सकता था।

शब्बो : क्यों?

देवकी : क्योंकि वो आम आदमी की तरह थे। वो किसानों वेळ संग उठते-बैठते, काम करते, खाना खाते। उनवेळ पास हमेशा एक झोला रहता, उसमें रहती एक खुरपी और एक कलम। वो जहां भी जाते उस खुरपी से एक पौधा लगाते और....

शिवचरण : और व़ळलम से कहानी लिखते होंगे।

देवकी : नहीं चाचा, वो व़ळलम से गीत लिखते, जिन्हें वो देर रात तक, अलाव वेळ पास बैठकर अनगिनत तारों की छांव में, किसानों वेळ संग गाते।

बटेसर : कितने अच्छे थे न पळव़ळीर!

देवकी : हां बटेसर। जब पळव़ळीर एक जगह से दूसरी जगह जाते तो उनवेळ पीछे रह जाती गीतों की महक और पेड़ों की गूंजती सदाएं।

बलजिंदर : ए देवकी फिर तो राजा अपने बच्चे वेळ लिए उस पळव़ळीर वेळ पास गया होगा।

देवकी : नहीं! राजा ने तो ऐलान करा दिया था।

मुनादीवाला : सुनो सुनो सुनो! जो कोई भी इस पळव़ळीर को राजा वेळ महल में लेकर आएगा मुंह मांगा इनाम पाएगा। सुनो सुनो सुनो। *;बैठता है।*

शिवचरण : लेकिन वो पळव़ळीर राजा वेळ महल में नहीं गया होगा।

सब : क्यों?

शिवचरण : क्योंकि वो एक सच्चा पीर था।

देवकी : हां चाचा। रियासत में बहुत लोगों ने बड़े बड़े लालच दिए, ख़ूब मिन्नतें की, लेकिन वो न माने। उनका तो बस एक ही कहना था।

पळव़ळीर : छोड़ मन हरि विमुखन को संग
जिनवेळ संग वुळबुळि उपजत है, परत भजन में भंग
छोड़ मन हरि विमुखन को संग।

चंदन : इस पळव़ळीर की मुलाव़ळात उस ग़ुलाम से करवा देते हैं।

सब : हां-हां करा दो।

सब बाग़ बनाते हैं। ग़ुलाम काम करता है।

बलजिंदर : शाम का वक़्त था। पंछी परिंदे अपने घोंसलों को लौट रहे थे। दिन भर वेळ थवेळ हारे पळव़ळीर जब उस बाग़ में पहुंचे जहां ग़ुलाम काम कर रहा था, तो इतने ख़ूबसूरत पूळल, इतने रसीले फलों को देखकर पळव़ळीर ख़ुशी से झूम उठे। *;पळव़ळीर झूमने लगता है।* उनका गाना सुनकर ग़ुलाम भी झूम उठा। जब पळव़ळीर की आंख खुली...

ग़ुलाम : बाबा आप का गाना सुनकर तो मेरी दिन भर की थकान दूर हो गई।

पळव़ळीर : थकान तो रसीले फलों को, इन ख़ूबसूरत पूळलों को देखकर ख़ुद ब ख़ुद मिट जाती है। क्या तुम इस बाग़ वेळ माली से मिलवा सकते हो।

ग़ुलाम : क्यों बाबा?

पळव़ळीर : मैं उन कर्मठ हाथों को चूमना चाहता हूं। उस सिरजनहारे से मिलना चाहता हूं जिसने इस कायनात को नूर बख़्शा है।

ग़ुलाम : *;संकोच से।* पर बाबा इस बाग़ को तो मैंने लगाया है।

पळव़ळीर, ग़ुलाम वेळ हाथों को चूमता है और उन्हें आंखों से लगाता है। ग़ुलाम हकबका जाता है।

ग़ुलाम : *;हैरानी से।* बाबा! आप ये क्या कर रहे हैं? मैं तो नीच हूं, पापी हूं। तभी तो इस जनम में भी ग़ुलाम हूं।

पळव़ळीर : अव्वल अल्लाह नूर उपाया व़ुळदरत दे सब बंदे, एक नूर से सब जग उपज्या कौन भले कौन मंदे।

ग़ुलाम : बाबा आप वैळसी बातें कर रहे हैं? मेरी वुळछ समझ में नहीं आ रहा है।

फ़ळ्ऴीर : इसमें समझने का क्या है? मैं तो उस सृष्टि की तारीफ़ळ कर रहा था जिसे तुमने रचा है।

ग़ुलाम : पर बाबा यह बाग़ तो महाराज का है।

फ़ळ्ऴीर : लेकिन इन सबको लगाया तो तुमने है।

ग़ुलाम : बाबा आप मेरे घर चलेंगे।

फ़ळ्ऴीर : हां-हां क्यों नहीं। चलो। *[दोनों जाते हैं। फ़ऴऴीर घूमकर बैठ जाता है। ग़ुलाम घूमकर घुटनों वेळ बल बैठ जाता है। बहुत डरा हुआ है। राजा ग़ुस्से से आता है।]*

राजा : तुझे वो फ़ऴऴीर कहां मिला था?

ग़ुलाम : महाराज अपने बाग़ में।

राजा : अपने बाग़ में नहीं, हमारे बाग़ में।

ग़ुलाम : जी महाराज।

राजा : क्या कह रहा था?

ग़ुलाम : वो मेरे पूळलों और फलों की तारीफ़ळ कर रहे थे।

राजा : हमारे पूळल, हमारे फल।

ग़ुलाम : जी महाराज। मैं भी बाबा से *;राजा बात काटता है।द्ध*

राजा : *;गरजकरद्ध* आंखें नीची रख वुळत्ते।

[ग़ुलाम गर्दन नीचे झुका लेता है।]

ग़ुलाम : जी महाराज। मैं भी उनसे यही कह रहा था कि ये सब तो महाराज का है।

राजा : फिर उसने क्या कहा?

ग़ुलाम : उन्होंने कहा- पर इन सबको लगाया तो तुमने है।

राजा : *;तंज़ मेंद्ध* तूने लगाए तो क्या वो तेरे हो गए?

ग़ुलाम : ऐसा मैंने कब कहा महाराज।

राजा : फिर?

ग़ुलाम : फिर वो मेरे घर गए।

राजा : उस झोपड़े में जो हमने तुझे रहने को दिया।

ग़ुलाम : जी महाराज।

राजा : क्या करने गया था वो उस झोपड़े में?

ग़ुलाम : वो मेरे घर खाना खाने गए थे।

राजा : और तूने तो छप्पन भोग परोसे होंगे!

ग़ुलाम : महाराज मेरे घर छप्पन भोग कहां? मैंने तो दो सूखी रोटी उन्हें खिलाईं।

राजा : वो रोटी जो हम अपने वुळत्तों को खिलाते हैं।

ग़ुलाम : जी महाराज।

राजा : तूने हमारा ऐलान सुना था?

ग़ुलाम : जी महाराज।

राजा : तो उस फ़ऴऴीर को हमारे यहां क्यों नहीं लेवेळ आया?

ग़ुलाम : पर महाराज वो तो आपवेळ ही यहां आए थे।

राजा : क्या बकवास कर रहा है!

ग़ुलाम : जी महाराज। मुझसे बाबा ने कहा-मैं तेरे यहां आया मतलब राजा वेळ यहां आया। अगर राजा ये बात समझ जाए तो वो धन्य है।

;अपने गमछे को चाबुक बनाकर फटकारता है।द्ध

राजा : हरामज़ादे! हमसे ज़बान लड़ाता है। तू जानबूझकर उस फ़ऴऴीर को हमारे यहां नहीं लाया। तू हमसे बदला लेना चाहता था क्योंकि हमने तुझे पिटवाया, बाग़ में आग लगाई। तू नहीं चाहता कि हमारे यहां औलाद पैदा हो। तू नहीं चाहता कि हमारा वंश आगे बढ़े। सिपाहियो! इस हरामज़ादे को मार-मारकर भुस भर दो। *[राजा बैठता है। ग़ुलाम गिर जाता है।]*

बलजिंदर : *;तिलमिलाकरद्ध* ये क्या बात हुई? पिछली बार तो ग़ुलाम ने एक फल भी तोड़ा था। इस बार तो ग़ुलाम ने वुळछ भी नहीं किया था, फिर भी राजा ने उसे मारा। मैं तो कहता हूं ये राजा पापी है, अत्याचारी है। ऐसी सज़ा तो कोई जानवरों को भी नहीं देता। ये राजा नरक में जाएगा।

बटेसर : *;हड़बड़ाकर और तैश में आकरद्ध* हां बलजिंदर! मैं जाऊंगा उस ग़ुलाम वेळ पास। उससे कहूंगा मुझे ले चल राजा वेळ पास। मैं उसे ख़ूब मारूंगा, ख़ूब मारूंगा। मैं उसकी शर्ट फाड़ दूंगा। उसकी पैंट फाड़ दूंगा। और उसे नंगा करवेळ जंगल में फेंक दूंगा।

कर्मा : ये तो वही हुआ कि गिरा घोड़े से और ग़ुस्सा साइस पे। बच्चा नहीं हो रहा था राजा ख़ुद से, और पीट-पीट कर बुरा हाल कर दिया बेचारे ग़ुलाम का।

देवकी : लेकिन कर्मा ताऊ, अगर ग़ुलाम फ़ऴऴीर को राजा वेळ महल में ले जाता, तो हो सकता है रानी को बच्चा हो जाता।

बलजिंदर : राजा को बच्चा नहीं हो रहा था, तो क्या वो ग़ुलाम को मार-मारकर उसकी जान ले लेता?

चंदन : भई राजा को अगर बच्चा नहीं हो रहा था तो शब्बो बुआ का एक लौंडा गोद ही ले लेता।

शब्बो : एक क्यों, चारों ले लेता। और संग संग मुझे भी ले लेता।

[सब हँसते हैं]

कर्मा : उसे मरना था क्या?

बलजिंदर : तुम लोग हँस रहे हो और उस ग़ुलाम बेचारे को इतनी मार पड़ी।

चंदन : अच्छी मार पड़ी ग़ुलाम को। वो ग़ुलाम जानबूझकर फ़ऴऴीर को राजा वेळ महल में नहीं ले गया। वो राजा से बदला लेना चाहता था।

बलजिंदर : वो बेचारा क्या बदला लेता। वो तो सीधा-सादा था। भोला-भाला था। हमारे बटेसर की तरह।

चंदन : अबे वो सीधा-सादा, भोला-भाला नहीं था। वो तेरी तरह मीसना था मीसना। कहानी याद कर बलजिंदर कहानी।

बलजिंदर : हां, बता कहानी!

चंदन : जब राजा ने ग़ुलाम से पूछा- 'तू उस पळव़ळीर को मेरे महल में क्यों नहीं लाया?' तो ग़ुलाम कहने लगा-'महाराज बाबा ने मुझसे कहा-मैं तेरे यहां आया मतलब राजा वेळ यहां आया। ऐसी बात करने वाले बड़े कांइयां होते हैं, शातिर होते हैं एक नंबर वेळ।

बलजिंदर : वो तो राजा को इ़ज़्ज़त बख़्श रहा था।

कर्मा : ख़ाक की इ़ज़्ज़त बव़ळश रहा था। मार से तो अच्छे-अच्छों वेळ भूत भाग जाते हैं। उसने भी डर वेळ मारे कह दिया होगा।

बटेसर : ए ए ए कर्मा ताऊ तू बड़ा चालू है। कभी राजा की तरप़ळ से बोलता है और कभी ग़ुलाम की तरप़ळ से।

शब्बो : बटेसर, मैं इस कर्मा को ख़ूब जानूं। हमेशा ढुल-मुल ढुल-मुल कभी इधर तो कभी उधर। थाली का बैंगन न हो तो।

[सब हँसते हैं। कर्मा खिसियाता है।]

कर्मा : भई मैं तो सिर्पळ कहानी की बात कह रहा था।

शब्बो : कहानी की बात तो ये है की सारी ग़लती उस पळव़ळीर की थी।

सब : ये क्या कह रही है? पळव़ळीर की वैळसे?....

शब्बो : अगर पळव़ळीर इतना ही हिमायती था ग़ुलाम का, तो वो ख़ुद क्यों नहीं चला गया राजा वेळ महल में? कम से कम बेचारे ग़ुलाम को मार तो न पड़ती।

बलजिंदर : क्या शब्बो बुआ? तुम हमेशा राजा की तरप़ळ से बोलती हो। ऐसे वैळसे चला जाता पळव़ळीर राजा वेळ यहां? वो आजकल वेळ संतो जैसा नहीं था। क्या नाम है उसका?

शिवचरण : चंद्रास्वामी।

बलजिंदर : हां, वो चंद्रास्वामी की तरह नहीं था जो अजीरों-वजीरों वेळ तलवे चाटता हो। वो एक सच्चे पळव़ळीर थे। उनवेळ वुळछ उसूल थे, एक पळलसपळा था।

शब्बो : हां-हां बहुत ऊंचे उसूल और उससे भी बढ़िया उसका पळलसपळा। पळव़ळीर ख़ुद तो हो गया गोली और मार पड़ी बेचारे गुलाम को। बिलवुळल तुम्हारे कामरेड श्यामलाल की तरह, भाषण देकर ख़ुद तो हो जाते हैं गोली और जब लाठी चलती हैं तो हम मज़दूरों वेळ सीने पे ही चलती हैं। हां नहीं तो।

बटेसर : *;अचानकद्ध* कामरेड श्यामलाल कहीं गोली नहीं होते। पिछली बार भी जुलूस में सबसे पहली लाठी उन्हीं वेळ सिर पर पड़ी थी। फिर भी जुलूस में सबसे आगे थे लाल झंडा लेवेळ। और शब्बो बुआ अब तक तो उन्होंने लाल झंडा लगा भी दिया होगा। आओ, आवेळ देखो तुम सब।

[दो तीन लोग बोलते हैं- हां-हां तू ही देख ले।]

हां-हां आओ-आओ वो देखो वो...*[बटेसर खिड़की से देखता है। निराश होता है।]*

चंदन : क्यों लग गया झंडा?

देवकी : झंडा ना लगने का, लिखवा लो मुझसे।

कर्मा : अबे झंडे वेळ इंतज़ार में सूख वेळ कांटा हो जाएगा। पर झंडा ना लगवा पाएगा।

बटेसर : *;बैठता है।द्ध* हां-हां ठीक है।

शिवचरण : एक सवाल मेरा भी है।

सब : पूछो पूछो।

शिवचरण : अगर ग़ुलाम पळव़ळीर को राजा वेळ पास ले जाता, तो क्या उसको इनाम मिल जाता।

सब : क्यों नहीं मिलता? पता नहीं। शायद मिल जाता।

बलजिंदर : चाचा, बिल्वुळल नहीं मिलता। ये राजा भी मालिक जैसे होते हैं, कोई न कोई नुस्ख़ा निकाल कर इनाम न देते।

देवकी : लेकिन बलजिंदर, हो सकता है रानी ख़ुश होकर इनाम दे देती।

बलजिंदर : हां बड़ी आई रानी दिलवाली।

चंदन : रानी देती या न देती राजा इनाम दे देता।

सब : वैळसे? वैळसे? क्या कह रहा है। अभी तो वुळछ और कह रहा था?

चंदन : सुनो सुनो। अगर मैं राजा होता तो मैं कहता 'तू मेरा ग़ुलाम। तेरा इनाम मेरा।'

;हँसता है।द्ध

बटेसर : देवकी कहानी में आगे क्या हुआ?

देवकी : दिन, महीने, साल बीत गए लेकिन राजा-रानी को बच्चा नहीं हुआ। उन्होंने तरह-तरह की तरकीबें की। रानी ने लोमड़ी वेळ नाख़ूनों से अपना शृंगार किया।

शिवचरण : राजा-रानी ने सांप की जीभ खाई।

बलजिंदर : राजा और रानी ने खजूर वेळ पेड़ पे चढ़कर गिलहरी की तरह काजू वुळतरे।

कर्मा : राजा और रानी ने कई दिनों तक छछूंदर का अचार खाया।

बटेसर : देवकी फिर तो रानी वेळ बच्चा हो गया होगा न?

देवकी : चल! ऐसे थोड़े ही न होते हैं बच्चे!

बटेसर : फिर क्या हुआ?

देवकी : फिर उस रियासत में एक तांत्रिक आया और तांत्रिक ने राजा से कहा-

तांत्रिक : बम-बम, बम-बम, बम-बम, बम-बम!

राजा : महाराज हमारे यहां कोई औलाद नहीं है। आप कोई उपाय बताएं।

तांत्रिक : हां है एक उपाय। एक दस बारह साल की कन्या लाओ। और उसवेळ पहले महीने वेळ पांचवे दिन देवी वेळ मंदिर में उसकी बलि चढ़ाओ और मुंह मांगी मुराद पाओ। बम-बम, बम-बम, बम-बम, बम-बम! *[राजा और तांत्रिक बैठ जाते है।]*

बलजिंदर : फिर तलाश शुरू हुई लड़की की। यहां ढूंढ़ा-वहां ढूंढ़ा वुळछ न छूटा।

कर्मा : सभी जगह वेळ चौकीदारों को बुलाया।

शिवचरण : सभी सरपंचों को बुलाकर पूछताछ की गई।

शब्बो : सभी गांवों में खोज की गई।

देवकी : आस-पास की सभी रियासतों में घोड़े दौड़ा दिए गए।

बलजिंदर : लेकिन फिर भी न मिली लड़की। राजा और रानी वेळ दिलों पे बिजली कड़की।

राजा बहुत झल्लाया। अगले ही दिन सिपाही ये ख़बर लाया।

[गमछे वेळ इस्तेमाल से सिपाही बनता है।]

सिपाही : महाराज की जय हो। महाराज, गुलाम की बेटी बारह साल की हो गई है। और उसका पहला महीना अभी शुरू नहीं हुआ है।

राजा : वाह सिपाही वाह! बहुत अच्छी ख़बर लेवेळ आए हो। ये लो पचास स्वर्ण मुद्राएं। अपने बच्चों को मिठाई खिलाना। जाओ और उस ग़ुलाम को हमारे दरबार में पेश करो।

[सिपाही ग़ुलाम को उठाकर राजा वेळ सामने पेश करता है।]

वाह ग़ुलाम वाह। तू तो धन्य हो गया रे। तेरी जगह अब स्वर्ग में पक्की।

ग़ुलाम : महाराज आप वैळसी बातें कर रहे हैं। मेरी समझ में वुळछ नहीं आ रहा।

राजा : देवी मां की वृळपा से हमारे यहां औलाद पैदा हो सकती है। और वो तभी होगा जब हम तेरी बेटी की बलि उनवेळ मंदिर में चढ़ाएंगे।

ग़ुलाम : *;रोता हैड्ढ* महाराज आप चाहें तो मेरी बलि ले लीजिए मगर मेरी बेटी को...

राजा : *;हँसता हैड्ढ* अगर तेरी बलि चढ़ाने से हमारे यहां औलाद पैदा होती तो हम कबकी चढ़ा देते। हमारे यहां औलाद पैदा होगी तेरी बेटी की बलि चढ़ाने से। अब जा और अपनी बेटी को लेकर आ।

ग़ुलाम : जो आज्ञा महाराज।

[दोनों बैठते हैं।]

बलजिंदर : ये क्या बात हुई भला? ग़ुलाम इतनी आसानी से अपनी बेटी की बलि चढ़ाने पर राज़ी हो गया?

शब्बो : ग़ुलाम आख़िर ग़ुलाम ही तो था। उसवेळ पास और चारा ही क्या था?

बलजिंदर : ये बात तो समझ में आती है कि राजा का ग़ुलाम पर हवुळ बनता है। लेकिन राजा का ग़ुलाम की बेटी पर भी हवुळ था क्या?

शब्बो : बलजिंदर, ग़ुलाम कोई अवेळले ही ग़ुलामी नहीं करता था, उसका पूरा परिवार राजा का ग़ुलाम था।

देवकी : शब्बो बुआ, एक औरत की वजह से एक लड़की की बलि? रानी की वजह से ग़ुलाम की बेटी की बलि? ये बात सही नहीं लगी।

कर्मा : देवकी यहां सवाल लड़की या औरत का नहीं है, यहां सवाल है राजा और ग़ुलाम का। राजा और रानी वेळ लिए ग़ुलाम और उसका परिवार जानवरों से भी बदतर होता है।

शिवचरण : भई एक सवाल मेरा भी है। इस कहानी में अगर तुम्हें राजा या ग़ुलाम में से कोई एक बनना पड़े तो तुम क्या बनना पसंद करोगे-राजा या ग़ुलाम?

चंदन : *;कंधी करता हैड्ढ* ये भी कोई सवाल हुआ? राजा बनोगे या गुलाम? भई अपुन तो राजा ही बनेंगे न! राजा वेळ कितने ठाठ थे कितने बाट थे। भई अपुन तो बनेंगे राजा।

देवकी : चाचा, राजा तो बहुत अत्याचारी था, और ग़ुलाम को बहुत मार पड़ती। वुळछ और नहीं बन सकते?

शिवचरण : न न! राजा या ग़ुलाम।

देवकी : फिर तो मैं भी बनूंगी राजा।

शिवचरण : क्यूं?

देवकी : क्योंकि राजा को वुळछ काम नहीं करना पड़ता। न उसे कपड़े धोने पड़ते, न खाना बनाना पड़ता, न बर्तन मांझने पड़ते और न ही इस मुई पैळक्ट्री में काम करना पड़ता। राजा वेळ तो ढेर सारे नौकर-चाकर थे जो उसकी ख़िदमत में लगे रहते थे और राजा करता सिर्पळ आराम!

कर्मा : भई शिवचरण, था तो राजा बड़ा अत्याचारी और ग़ुलाम की जान को भी फजीहत थी, फिर भी हम तो बनेंगे राजा।

शिवचरण : क्यों ?

कर्मा : क्योंकि हम किसी राजा से कम थोड़े ही हैं। *;हँसता है।द्ध*

शब्बो : तंग आ चुकी हूं मैं ग़ुलामी करते-करते। कभी उस पति की ग़ुलामी, कभी उन मुए बच्चों की और कभी इस पैॆळक्ट्री की ग़ुलामी। मुझे तो इस ग़ुलाम शब्द से ही नफ़ळरत है। मैं तो बनूंगी राजा।

चंदन : *;कंधी करता हैद्ध* तो शब्बो बुआ, तू भी यहीं आ जा, सारे राजा यहीं बैठे हैं।

शब्बो : उस मुए कर्मा को वहां क्यूं छोड़ दिया। उसने भी तो राजा बनना ही चुना था।

चंदन : शब्बो बुआ वो तो थाली का बैंगन है। आज उधर लुढ़क गया।

बटेसर : थाली का बैंगन *;सब हँसते हैं।द्ध*

शिवचरण : भई सब राजा ही बनोगे कोई ग़ुलाम नहीं बनेगा?

शब्बो : बटेसर से पूछ ले।

शिवचरण : क्यों बटेसर तू बनेगा ग़ुलाम?

बटेसर : *;हकबका वेळद्ध* मैं ग़ुलाम नहीं बनूंगा।

शिवचरण : तो फिर क्या बनेगा?

बटेसर : मैं तो झंडा देखने जा रहा हूं। *;खिड़की से देखता है।द्ध*

देवकी : शब्बो बुआ। मुझे उल्टी आ रही है।

शब्बो : तो वहां जाकर कर न मुई। हमारे ऊपर करेगी क्या!

देवकी दूसरी खिड़की वेळ पास जाकर उबकाई करती है।

शिवचरण : बलजिंदर तुम बड़ी देर से चुपचाप बैठे हो। तुम क्या बनोगे? राजा या ग़ुलाम।

इसवेळ आगे वेळ संवाद, जब तक लाल झंडा लगता है, दृश्य आलटरनेट होते हैं। एक तरफ़ळ देवकी और बटेसर खिड़की वेळ पास हैं। जब वो बोलते हैं तब बाक़ळी पांच फ्ऱीज़ हैं। जब बलजिंदर बोलता है और कर्मा, शब्बो, शिवचरण और चंदन का मूवमेंट होता है, तब देवकी और बटेसर फ्ऱीज़ हैं।

बलजिंदर : चाचा मैं ग़ुलाम बनूंगा। *;शब्बो, चंदन, कर्मा उसे हैरानी से देखते हैं।द्ध*

बटेसर : देवकी वो देख बाहर देख? *;खिड़की से बाहर देखता है।द्ध*

देवकी : क्या झंडा लग गया है?

बटेसर : नहीं! वो तारा देख। कितना सुंदर है न? *;देवकी देखती है।द्ध*

देवकी : हां सचमुच!

शिवचरण : क्यूं भई? यहां सब राजा बनेंगे तुम अवेळले क्यों ग़ुलाम बनोगे?

बलजिंदर : क्योंकि ग़ुलाम वेळ हाथों में जादू था।

बटेसर : ये तारा कितना जादुई लग रहा है न!

देवकी : मेरी नानी कहती है कि अगर गर्भवती औरत इस तारे को देखे तो उसे सुंदर बच्चा पैदा होता है।

बलजिंदर : वो एक वैज्ञानिक भी था।

देवकी : ये भोर का तारा है। इसका मतलब सुबह होने वाली है।

बलजिंदर : वो रोज़-रोज़ नए आविष्कार करता था।

बटेसर : देवकी मैं हाथ बढ़ाकर इस तारे को पकड़ लूं।

देवकी : ए बटेसर क्या कर रहा है। गिर जाएगा तू।

बटेसर : ए देवकी वो देख गेट पर क्या हो रहा है।

बलजिंदर : इसीलिए मैं तो ग़ुलाम बनूंगा।

चंदन : 'ग़ुलाम बनूंगा।' अबे ग़ुलाम कितनी मेहनत करता था, तू कर सकता है ग़ुलाम जितनी मेहनत? कर सकता है ?

बलजिंदर : हां, कर सकता हूं।

चंदन : *;हाथ उठाता हैद्ध* बलजिंदर!

बटेसर : ये कामरेड श्यामलाल हैं। मैं उनकी टोपी पहचानता हूं। ये झंडा लगाने आए हैं। हां कामरेड लगा दो झंडा, हां-हां।

देवकी : ए बटेसर चुप कर! सिक्यूरिटी वाले जाग जाएंगे।

बलजिंदर : तू मुझे मारना चाहता है न! आ मार! तू मुझे मारते-मारते थक जाएगा लेकिन मैं मार खाते-खाते नहीं थवूळंगा। यही फ़ळर्वळ है हम दोनों में। तू मार सकता है और मैं मार खा सकता हूं। और कोई फ़ळर्वळ नहीं हम दोनों में। तू भी ग़ुलाम है और मैं भी ग़ुलाम हूं। हम सब ग़ुलाम हैं।

बटेसर : हां कामरेड लगा दो झंडा। कामरेड वो सिक्यूरिटी वाला आपवेळ पीछे। कामरेड बच वेळ। ओए कामरेड वेळ सिर पर लाठी मार दी। सुरेश तू चढ़ जा दीवार पे, चढ़ जा, चढ़ जा, हां-हां झंडा लगा दे। होए लग गया झंडा। कामरेड श्यामलाल ने झंडा लगवा दिया। *बटेसर नाचता है। चंदन भागकर खिड़की वेळ बाहर देखता है।*

शब्बो : क्या हुआ चंदन? क्या कह रहा है ये?

चंदन : बुआ, इन्होंने तो सच्ची में झंडा लगा दिया।

बलजिंदर : हां हां बुआ। ये ठीक कह रहा है। मैंने अपनी आंखों से देखा है। इन्होंने झंडा लगा दिया।

कर्मा : तो क्या हो गया?

देवकी : लेकिन कर्मा ताऊ ये भी तो देखो उन्होंने कितनी बहादुरी से झंडा लगाया है।

चंदन : झंडा लग गया तो क्या हुआ? झंडा तो पहले भी लगा हुआ था। झंडा लगाने से दुनिया बदल जाएगी क्या?

देवकी : लेकिन चंदन हम तो कह रहे थे कि एक बार उतरा झंडा दोबारा नहीं लग सकता। लेकिन झंडा तो लग गया न! तो दुनिया क्यों नहीं बदल सकती?

बलजिंदर : हां-हां चंदन बता दुनिया क्यों नहीं बदल सकती?

चंदन : तू तो बोल ही मत। *[चंदन, बलजिंदर पर हाथ उठाने लगता है। बुआ रोकती है। चंदन गुस्से में खिड़की वेळ पास जाता है।]*

शब्बो : चंदन! बलजिंदर तू बवेळ ही मत। अभी तूने ही कहा था न कि हम सब ग़ुलाम हैं? याद रख तू भी ग़ुलाम है, ये देवकी भी ग़ुलाम है और इसका होने वाला बच्चा भी ग़ुलाम है।

देवकी : नहीं! मेरा बच्चा ग़ुलाम नहीं रहेगा। मैं बाहर जा रही हूं। *[जाने लगती है।]*

कर्मा : बाहर जाने से क्या होगा देवकी? बाहर जाने से क्या तू ग़ुलाम नहीं रहेगी? हम मज़दूर हैं और मज़दूर हमेशा ग़ुलाम ही रहता है। वो चाहे पैळक्ट्री वेळ अंदर हो या बाहर।

बटेसर : *;उत्तेजित है।द्ध* जो बाहर हैं वो ग़ुलाम नहीं हैं। कामरेड श्यामलाल ग़ुलाम नहीं हैं। जो लाल झंडा उठाता है, जो लाल झंडा लेकर चलता है, जो लाल झंडा लगाता है वो ग़ुलाम नहीं होता।

चंदन : *;खिड़की से बाहर देखता हुआद्ध* ओए! सिक्यूरिटी वालों ने कामरेड श्यामलाल को कंपाउंड में घसीट लिया है। वो उन्हें बुरी तरह से पीट रहे हैं।

बटेसर : कामरेड को पीट रहे हैं! तो मैं बाहर जा रहा हूं। *[बटेसर बाहर की तरफ़ळ जाने लगता है। सब उसे देखते हैं। वो फ्रीज़ होता है।]*

शिवचरण : बटेसर ने अपना पैळसला ले लिया है। अब हमारे सामने ये सवाल नहीं है कि हम राजा रहेंगे या ग़ुलाम। हमारे सामने सवाल ये है कि हम ग़ुलाम रहेंगे या नहीं। *;बटेसर चलता हैद्ध* बटेसर चल पड़ा है। अब हमें ये तय करना है कि हम अंदर रहकर ग़ुलाम रहेंगे या बाहर जाकर लाल झंडा उठाएंगे।

[इस संवाद वेळ दौरान बटेसर झंडा उठाता है।]

गाना : वो कहेंगे न होगा इस शब का सवेरा
यव़ळीन न करना, यव़ळीन न करना
वो कहेंगे उगलेगा सूरज अंधेरा,
यव़ळीन न करना, यव़ळीन न करना।
वो कहेंगे काली घुप रात में
अवेळले हो तुम, अवेळले हैं सारे।
वो कहेंगे हाथ रोशनी का न थामो
तारे नहीं, मिलेंगे अंगारे।
वो कहेंगे, अंधेरा तुम्हारा करम है,
यव़ळीन न करना, यव़ळीन न करना।
वो कहेंगे, ये सुबह मिथ्या भरम है,
यव़ळीन न करना, यव़ळीन न करना।
वो कहेंगे अंधेरे वेळ जश्न मनाओ, प़ळायदा उठाओ
ये स्याही तो मौव़ळों से भरी है।
वो कहेंगे उजाले की लौ न लगाओ न ख़ुद को जलाओ
सुबह वेळ सूरज की धूप कड़ी है।
वो कहेंगे ये रात टल न सकती।
यव़ळीन न करना, यव़ळीन न करना।
वो कहेंगे ये दुनिया बदल न सकती,
यव़ळीन न करना, यव़ळीन न करना।

o